

## रूमेटॉइड आर्थराइटिस में आयुर्वेदिक संपूर्ण प्रणाली

स्रोत: पी.आई.बी.

### चर्चा में क्यों?

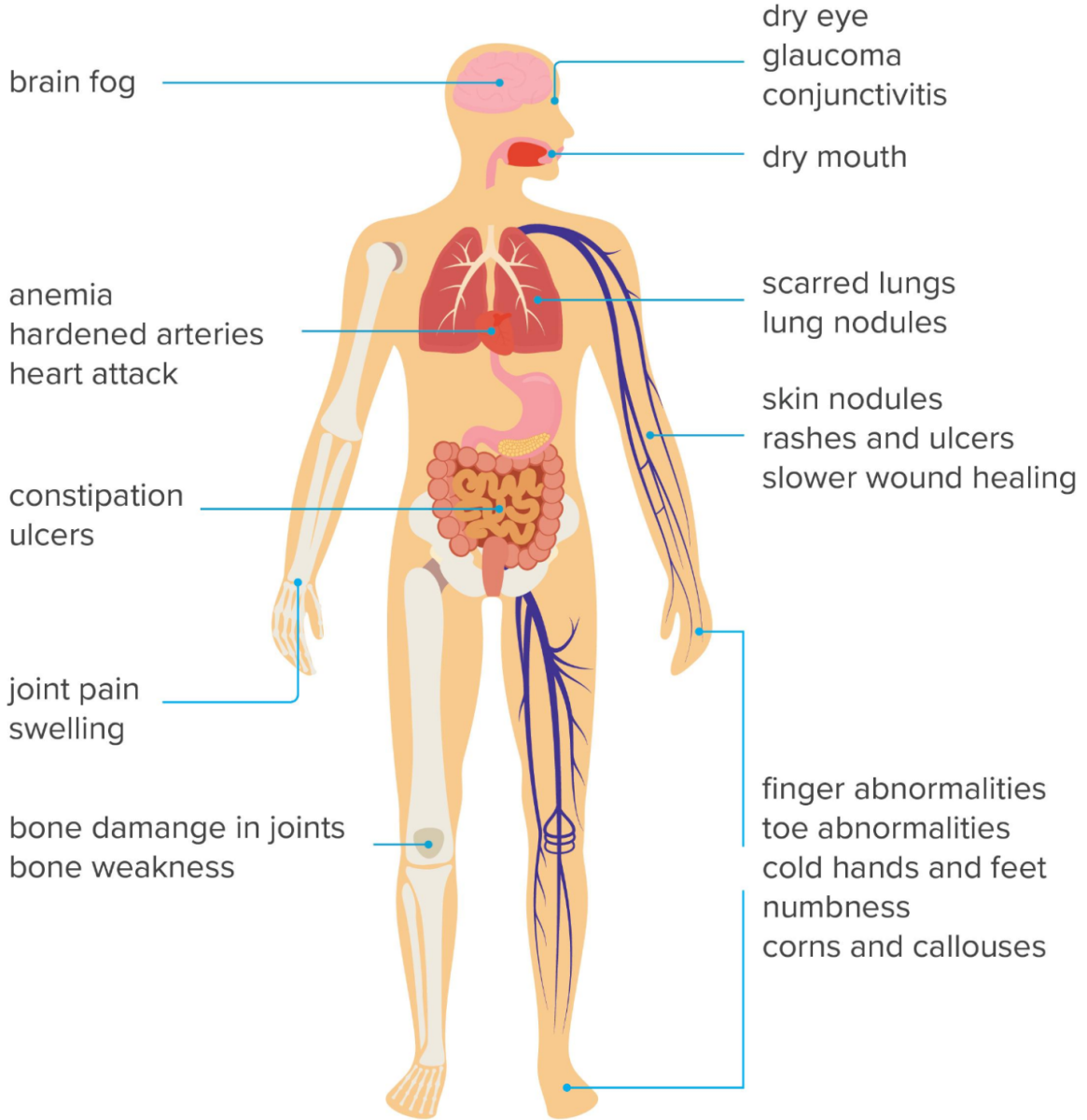
हाल ही में एक अध्ययन ने दीर्घकालिक ऑटोइम्यून रोग **रूमेटॉइड आर्थराइटिस (RA)** के प्रबंधन में **आयुर्वेदिक संपूर्ण प्रणाली (AWS)** की प्रभावशीलता पर प्रकाश डाला।

- शोध से पता चलता है कि AWS न केवल RA के लक्षणों को कम करता है बल्कि रोगियों में **सामान्य त्रयापचय संतुलन** के पुनर्स्थापन में भी मदद करता है।
- यह पारंपरिक चिकित्सा उपचारों के लिये एक आशाजनक **पूरक उपगम** प्रस्तुत करता है।

### रूमेटॉइड आर्थराइटिस के संदर्भ में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **परिचय:** RA एक दीर्घकालीन सूजन/शोथ संबंधी रोग है, जो **जोड़ों की परत/अस्तर को प्रभावित** करता है, जिससे दर्दनाक सूजन होती है, जो अंततः **अस्थियों के क्षय** और **जोड़ों की विकृति का कारण** बन सकती है।
  - कुछ लोगों में यह स्थिति **त्वचा, आँखों, फुफ्फुस, हृदय और रक्त वाहिकाओं** सहित शरीर के कई अंगों को नुकसान पहुँचा सकती है।
  - यह एक **ऑटोइम्यून रोग** है। ऐसा तब होता है जब प्रतिरक्षा प्रणाली ठीक से काम नहीं करती है और **जोड़ों की परत** पर हमला करती है, जिसे **सिनोवियम** कहा जाता है।
- **अध्ययन का महत्त्व:** यह 'संप्राप्ति विधान' की आयुर्वेदिक अवधारणा पर आधारित है, जिसके तहत **रोग उत्पन्न करने वाली प्रक्रिया को नष्ट किया जाता है** और शरीर के 'दोषों' (जैव-ऊर्जाओं) को **वापस संतुलन में लाया जाता है**।
  - यह शोध महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके तहत आयुर्वेदिक संपूर्ण-प्रणाली दृष्टिकोण का उपयोग करके RA में पैथोलॉजी रिवर्सल की क्षमता का पता लगाया जाता है।
- **प्रेक्षित प्रमुख नैदानिक सुधार:**
  - **रोग गतिविधि में कमी:** रोग गतिविधि स्कोर-28 एरथ्रोसाइट अवसादन दर (**DAS-28 ESR**) में उल्लेखनीय कमी आई, जो RA की गंभीरता का आकलन करने के लिये एक महत्त्वपूर्ण उपाय है।
  - **जोड़ों की सूजन/शोथ में कमी:** AWS उपचार प्राप्त करने वाले रोगियों में **सूजन/शोथ और जोड़ों के क्षय संबंधी रोग** दोनों की कुल संख्या में कमी आई।
  - **वर्षाकृत पदार्थों में कमी:** शरीर में वर्षाकृत पदार्थों का मूल्यांकन करने वाले **Ama गतिविधिमाप (AAM)** स्कोर में हस्तक्षेप के बाद महत्त्वपूर्ण कमी देखी गई, जो तंत्रिक/दैहिक शोथ और वर्षाकृतता में कमी का संकेत देता है।
  - **मेटाबोलिक प्रोफाइल में बदलाव:** AWS उपचार के बाद **लाइसिन, क्रिएटिन** आदि जैसे असंतुलित मेटाबोलिक मार्कर स्वस्थ नयितरण में देखे गए सामान्य स्तरों की ओर शिफ्ट होने लगे, जो अधिक संतुलित मेटाबोलिक स्थिति में वापसी का संकेत देते हैं।
  - **अपनी तरह का पहला साक्ष्य:** यह RA के प्रबंधन में AWS की नैदानिक प्रभावकारिता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने वाला पहला अध्ययन है।
  - यह लक्षणों में कमी और मेटाबोलिक सामान्यीकरण के **दोहरे लाभ** पर प्रकाश डालता है, जो संभावित रूप से रोगियों के लिये दीर्घकालिक सकारात्मक परिणामों की पुष्टि करता है।
- **एकीकृत चिकित्सा (Integrative Medicine) के लिये नहितारथ:** यह अध्ययन पारंपरिक आयुर्वेदिक विधियों को आधुनिक चिकित्सा उपागमों के साथ एकीकृत करने की क्षमता को रेखांकित करता है।
  - इस तरह के इंटीग्रेशन से रोगी के उपचार, विशेषकर RA जैसी दीर्घकालिक स्थितियों के प्रबंधन में बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

## Effects on the Body Rheumatoid Arthritis



### आयुर्वेदिकी संपूर्ण प्रणाली क्या है?

- **परिचय:** आयुर्वेद भारत की टाइम टेस्टेड [पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली](#) है।
  - 'आयुर्वेद' शब्द जिसका अर्थ है 'जीवन का ज्ञान', दो संस्कृत शब्दों से मलिकर बना है, अर्थात 'आयु' जिसका अर्थ है 'जीवन' और 'वेद' जिसका अर्थ है 'ज्ञान' या 'वर्जिज्ञान'।
  - आयुर्वेद चिकित्सा की एक संपूर्ण-शरीर (समग्र) प्रणाली है। इस पद्धति में स्वास्थ्य और कल्याण के सभी पहलुओं के लिये एक प्राकृतिक उपागम अपनाया जाता है।
- **आयुर्वेदिकी रणनीति:** आयुर्वेद इस विचार पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति में कुछ जीवन शक्तियाँ (दोष) होती हैं और ब्रह्मांड में सब कुछ जुड़ा

हुआ है।

- किसी एक क्षेत्र में असंतुलन दूसरे क्षेत्र को प्रभावित कर सकता है।
  - जब असंतुलन को ठीक नहीं किया जाता है, तो बीमारी बढ़ सकती है और अस्वस्थता हो सकती है।
  - आयुर्वेद में अधिकतर पोषण, जीवनशैली में बदलाव और प्राकृतिक उपचार का प्रयोग किया जाता है।
  - इनका प्रयोग संतुलन और स्वास्थ्य के पुनर्स्थापन/रिवर्सल के लिये किया जाता है।
- **तीन प्रमुख ऊर्जाएँ (दोष):** आयुर्वेद तीन आधारभूत प्रकार की ऊर्जा या कार्यात्मक सदिधांतों की पहचान करता है, जो प्रत्येक जीव और प्रत्येक वस्तु में मौजूद हैं।
- **वात:** यह श्वसन, पलक झपकाने, माँसपेशियों की गतिविधि और तरल पदार्थों के परसिंचरण जैसे कार्यों को नियंत्रित करता है।
  - **पित्त:** यह पाचन, अवशोषण, पोषण और शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है।
  - **कफ:** यह शरीर के संरचनात्मक घटकों को नियंत्रित करता है, जोड़ों में स्नेहकता प्रदान करता है, त्वचा को नमी देता है और प्रतरिक्षा को बनाए रखता है।



# आयुष चिकित्सा पद्धति

आयुष में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं, आयुर्वेद का 5000+ वर्षों का प्रलेखित इतिहास है।

## आयुर्वेद

- संहिता काल (1000 ईसा पूर्व): परिपक्व चिकित्सा प्रणाली के रूप में उभरा
- चरक संहिता: सबसे प्राचीन और आधिकारिक संहिता
- सुश्रुत संहिता: आठ विशिष्टताओं में मौलिक सिद्धांत और चिकित्सीय विधियाँ प्रदान करती है
- मुख्य शाखा:
  - आग्नेय पुनर्वसु- चिकित्सकों की शाखा
  - दिवोदास धन्वतरि - शल्यचिकित्सकों की शाखा

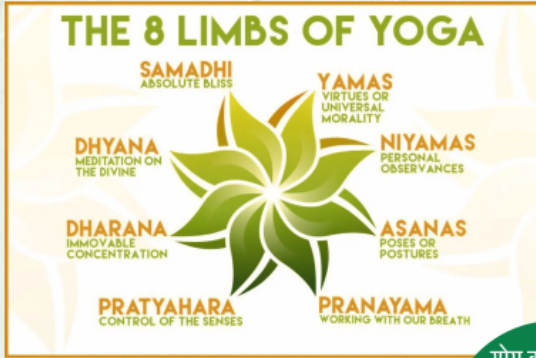
## आयुर्वेद की शाखाएँ

- काय चिकित्सा- चिकित्सा।
- शल्य चिकित्सा- सर्जरी।
- शालाक्य तंत्र- ईएनटी और नेत्र विज्ञान।
- बाल रोग चिकित्सा।
- अगद तंत्र- विष विज्ञान।
- भूतविद्या - मनोरोग।
- रसायन- कायाकल्प चिकित्सा और जराचिकित्सा।
- वाजीकरण तंत्र- सेक्सोलॉजी।



भगवान ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है

## योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा



- प्राकृतिक चिकित्सा: 5 प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की सहायता से उपचार
- शरीर की स्व-उपचार क्षमता सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों पर आधारित
- रोग-केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है

योग को सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया

## यूनानी

### ग्रीस में अग्रणी, अरबों द्वारा 7 सिद्धांतों के रूप में विकसित (उमूर-ए-तब्बिया)

- बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जालीनूस (गैलेन) की शिक्षाओं के ढाँचे के आधार पर
- चार ह्यूमर्स का हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित्त और काला पित्त
- WHO द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत द्वारा वैकल्पिक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में आधिकारिक दर्जा प्रदान किया गया

## सिद्ध

### 10000 - 4000 ईसा पूर्व; सिद्ध अगस्तियार- सिद्ध चिकित्सा के जनक

- निवारक, प्रोत्साहनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्जीवनात्मक और पुनर्वासात्मक स्वास्थ्य देखभाल
- 4 घटक: लैट्रो-रसायन विज्ञान, चिकित्सा अभ्यास, योग अभ्यास और बुद्धि
- 3 निदानात्मक ह्यूमर्स (मुक्कुट्टरम) और 8 महत्त्वपूर्ण परीक्षणों (एन्वागई थेरवु) पर आधारित है

आयुर्वेद के 3 गुण (त्रिदोष): वात, पित्त और कफ

## सोवा रिग्पा

### उत्पत्ति: भगवान बुद्ध के समय 2500 वर्ष पूर्व भारत में

- लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश आदि के हिमालयी क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा।
- भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (वर्ष 2010 में संशोधित) द्वारा भारत में मान्यता प्राप्त।

## होम्योपैथी

### जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया

- जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया।
- औषधियाँ मुख्यतः प्राकृतिक पदार्थों (पौधे उत्पाद, खनिज, पशु स्रोत) से तैयार की जाती हैं।
- वर्ष 1810 में यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया; वर्ष 1948 में आधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- 3 प्रमुख सिद्धांत:
  - सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटूर ("समः समम् शमयति" या "समरूपता")
  - सिंगल मेडिसिन
  - मिनिमम डोज़



UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)



प्रश्न. नमिनलखिति युगुमें में से कौन-सा एक भारतीय षडुदरुशन का भाग नही है? (2014)

- (a) मीमांसा और वेदान्त
- (b) नयाय और वैशेषकि
- (c) लोकायत और कापालकि
- (d) सांख्य और योग

उत्तर: (c)

प्रश्न. भारत में दारुशनकि वचिर के इतुहिस के संबंघ में, सांख्य सडुप्रदाय से सडुबनुधति नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि: (2013)

1. सांख्य पुनरुजनुड या आतुमा के आवागडुन के सदिधांत को सुवीकार नही करता है ।
2. सांख्य की मान्यता है कआतुड-जुजान ही डुकुष की ओर ले जाता है न ककुई बाहुय डुरभाव अथवा कारक ।

उडुरयुकुत कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 डुनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (b)

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि: (2010)

1. टैकुसस वृकुष डुराकुतकि रूड से हडुडालय कुषेतरु में डुआया जाता है ।
2. टैकुसस वृकुष को रेड डेटा डुकु में सुचीडुध कयिा गया है ।
3. टैकुसस वृकुष से डुराडुत 'टैकुसुल' नामक औषधाडुराकुसिंस रूग के वरुिदुध डुरभावी है ।

उडुरयुकुत कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)